भाकृअनुप-केद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए २० से २५ अक्टूबर, 2015 साप्ताहिक सलाह

(४९ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	जुलाई - अगस्त माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)						साप्ताहिक सलाह
दिनांक	20	21	22	23	24	25	
पंजाब							
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	फसल गूलर खुलने की अवस्था में है। *जी. आर्बेरियम* तथा *जी. हिर्सुटम* कपास में कपास की चुनाई प्रारंभ हो चुकी है। फसल किसी रोग का प्रकोप नहीं है। सनवा घास (*इकाइनोक्लोआ* प्रजाति), मोथा (*साइप्रस* प्रजाति), दूब घास (*सायनोडन* प्रजाति) तथा सांथी (*ट्राएथेमा* प्रजाति) जैसे खरपतवारों का प्रकोप फसल में है। रस चूषक कीटों की संख्या, जैसिड (0-3 प्रति 3 पत्तियाँ), सफेद मक्खी (10-16 प्रति 3 पत्तियाँ) तथा फूलकीट (0-0 प्रति 3 पत्तियाँ) दर्ज की गई। अब चूँकि अधिकांश गूलर खुल चुके है और कपास की चुनाई प्रारंभ हो चुकी है अत: इस समय सफेद मक्खी के प्रबंधन के लिए कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। किसान भाई साफ-सुथरी कपास चुनें। साफ कपास और चिपचिपी कपास को अलग-अलग चुनें। एक-तिहाई गूलर खुलने के बाद फसल की सिंचाई न करें। सड़े हुए गूलरों से कपास न चुनें। सुबह एकदम जल्दी कपास चुनने का कार्य प्रारंभ न करें। सूक्ष्मजीवों के नुकसान से बचने के लिए कपास को सुखाकर ही उसका भंडारण करें। राजस्थान मे फसल पुष्पन और गूलर खुलने की अवस्था में है।
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	
मुक्तसर	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा							
सिरसा	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान							
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा							फसल गूलर विकास तथा परिपकवावस्था में है। रस चूसक कीटों, *स्पोडोप्टेरा* तथा गूलर की सूंड़ियों का प्रकोप फसल पर है। लेकिन जैसिड की संख्या ही आर्थिक हानि स्तर से ऊपर है। कुछ स्थानों पर जीवाणु झुलसा रोग फसल पर देखा गया है। रस चूषक कीटों का नियंत्रण करने के लिए बूप्रोफेजिन अथवा डायफेंथ्यूरान का छिड़काव करें। पारिशिष्ट में दी गई सिफारिशों के अनुसार मुरझान और लाल पत्ती रोग की समस्या में डी.ए.पी. तथा सूक्ष्म पोषकतत्वों का फसल पर छिड़काव करें। इससे अधिक उपज लेने के लिए पौधों पर गुलरों का धारण अधिक होगा। विकासशील छोटे गुलरों की वृध्दि के लिए 1.5% डी.ए.पी. के साथ 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट का फसल पर छिड़काव करें। लाल पत्ती रोग के प्रबंधन के लिए 10ग्रा. यूरिया + 10ग्रा. मेग्नीशियम सल्फेट प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें। सुबह 10 बजे के बाद ही पूरी तरह से खुले हुए गूलरों से ही कपास चुनें। पहली बार चुनी हुई कपास को सुखाकर इसका अलग भण्डारण करें।
कोरापुट	0	0	0	0	0	0	
कालाहांडी	0	0	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	0	0	0	0	
गुजरात							
अमरेली	0	0	0	0	0	0	फसल पुष्पन और गूलर निर्माण अवस्था में है। किसानों से बीटी तथा गैर बीटी कपास की देखरेख इस प्रकार करने की सलाह दी जा रही है। **गुलाबी सूँडी**: अक्टूबर के अंत तक इस सूँडी का प्रकोप प्रारंभिक हानि के स्तर तक पहुँचने की संभावना है जो नवंबर-दिसंबर तक और बढ़ेगा। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि गुलाबी सूँडी के सर्वेक्षण के लिए फसल में 5-6 फीरोमोन ट्रैप प्रति हे. की दर से लगाए। आर्थिक हानि सीमा 8 पतंग प्रति ट्रैप प्रति रात्रि लगातार 3 रातों तक पकड़ में आने
भावनगर	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	

भरूच	0	0	0	0	0	0	अथवा सूंड़ियों के साथ 10% क्षतिग्रस्त गूलर पाए जाने पर क्वीनालफास अथवा थायोडीकार्ब का एक बार अक्टूबर में छिड़काव और पायरेथ्राइड विशेष रूप से लेम्डा-साइहेलोथ्रिन का एक बार नवंबर में फसल पर छिड़काव करें। बारानी खेत मे थायोडीकार्ब का एक से अधिक बार छिड़काव करने से पत्तियों के लाल होने की समस्या बढ़ सकती है। गुलाबी सूँडी का नियंत्रण नहीं करने पर यह सूँडी अक्टूबर-नवंबर में भारी नुकसान पहुँचा सकाती है। अक्टूबर के अंत तक किसी भी हालत में पायरेथ्राइड का छिड़काव न करें। कीटनाशक-मिश्रणों का छिड़काव अभी न करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ जाएगा। किसान भाई फसल को दिसंबर माह तक समाप्त कर दें। फसल को अगले वर्ष 2016 तक खेत में न रखें। गुलाबी सूँडी के प्रकोप को कम करने के लिए ऐसा करना आवश्यक है। इससे बीटी कपास में गूलर की सूंड़ियों के प्रति प्रतिरोधकता भी कम होगी। खेतों की मेंढ़ों पर यहाँ-वहाँ पिछले वर्ष की कपास सूखी लकड़ियों के ढेर लगे देखे जा सकते हैं। इन्हें तुरंत नष्ट कर दें। भण्डारों अथवा घरों में रखे गुलाबी सूँडी के क्षतिग्रस्त बीज को भी तुरंत नष्ट कर दें। यही क्षतिग्रस्त बीज अगली फसल में गुलाबी सूँडी के वाहक का कार्य करता है।
पाटन	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश							फसल पुष्पन और कली व गूलर निर्माण तथा गूलर खुलने की अवस्था में है। कांस, मोथा, बथुआ, हिरनखुरी, काटाकवले, गाजर घास प्रमुख खरपतवार कपास के खेतों में दिखाई दे रहे हैं। इनके लिए सिफारिश किए गए खरपतवारनाशकों का छिड़काव किया गया है। जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक हानि के ऊपर लेकिन चेंपा (एफिड) और फूलकीट का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज किया गया।
खरगोन	0	0	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र							
नागपुर	0	0	0	0	0	0	मानसून पूर्व बोई गई कपास गूलर खुलने की अवस्था, मानसूनी वर्षा होने पर बोई गई कपास गूलर विकास अवस्था तथा इसके बाद जुलाई में बोई गई कपास गूलर निर्माण की शुरुआती अवस्था में है। कली झड़न कपास की सभी प्रजातियों में देखा जा रहा है। बीटी क़िस्मों में लघुकली सूखने की समस्या भी नोट की गई है। कलियों के आगे झड़ने से रोकने के लिए फसल पर प्लानोफिक्स 5मिली. + 100ग्रा. यूरिया प्रति 10 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। एक सप्ताह बाद यह छिड़काव फिर दोहराएँ। कुछ क्षेत्रों में जैसिड तथा सफेद मक्खी का प्रकोप देखा जा रहा है। जून-जुलाई में बोई गई देसी तथा अमेरिकन कपास में अमेरिकन सूँडी का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से ऊपर रिकार्ड किया गया है। पर्याप्त नमी वाले खेतों में मृदा में डी.ए.पी. के अनुप्रयोग से गूलर स्थापन तथा गूलर धारण में बढ़ोत्तरी होगी। इससे उपज में वृद्धि होगी। डी.ए.पी. जमीन में न देने की स्थिति में 2% डी.ए.पी. का पुष्पन अवस्था में फसल पर छिड़काव करें और गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया के साथ 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का फसल पर छिड़काव करें। लाल पत्ती रोग के लिए फसल का निरीक्षण करते रहें क्योंकि महाराष्ट्र के कई भागों में तापमान अधिक चल रहा है। *हेलिकोवर्पा* के लिए अरहर का भी निरीक्षण करते रहें। अरहर कि पुष्पन अवस्था में इस वर्ष *हेलिकोवर्पा* सूँडी कि संख्या बढ़ सकती है। जालना जिले में जैसिड संख्या (60.23) अभी भी आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज कि गई है। जैसिड का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक औसतन 10-30% गावों में रिकार्ड किया गया है जो चंद्रपुर के 25% गावों में, नांदेड के 14.97% गावों में, परभणी के 14.89% गावों में दर्ज किया गया। जैसिड का प्रकोप 10% से कम जिन गावों में दर्ज किया गया हैं- अकोला के 9.60% गावों में, बुलढाणा के 9.40% गावों में, नागपुर के 6.25% गावों में, यवतमाल के 2.96% गावों में तथा बीड जिले के 2.04% गावों में। सफेद मक्खी कि संख्या जिन स्थानों/गावों/जिलों में आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई है वह इस प्रकार है, अमरावती जिले के 28.18% गावों में, वर्धा जिले के 5.38% गावों में। लाल पत्ती रोग से प्रभावित गांव धुले जिले के 73.95%, परभणी के 70.63% गांव, अहमदनगर के 45.82%, नागपुर के 43.75%, चंद्रपुर
वर्धा	0	0	0	0	0	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	0	0	0	0	0	0	
बीड़	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	

							के 43.42% गांव, गडचिरोली के 18.18% गांव, अमरावती के 17.60% गांव, बुलढाणा के 16.23% गांव, बीड जिले के 14.28% गांव, यवतमाल के 10.95% गांव, जालना के 6.34% गांव तथा नांदेड जिले के 6.58% गांव दर्ज किए गए।
तेलंगाना							
आदिलाबाद	0	0	0	0	0	0	फसल पुष्पन से चुनाई अवस्था में है। आवश्यक हिने पर नत्र व पोटाश उर्वरकों कि दूसरी व तीसरी विभाजित मात्रा दें। यूरिया 2.0% + 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का दो बार 7-10 दिनों के अंतराल में छिड़काव करें। 1-2% डी.ए.पी. अथवा 2.0% पोटेशियम नाइट्रेट का पुष्पन अवस्था से प्रारंभ करके गूलर विकास अवस्था पर 7 से 10 दिनों के अंतराल पर फसल पर छिड़काव करने कि सिफारिश कि जाती है। रस चूषक कीटों के प्रकोप में जैसिड कि संख्या 0.2 से 1.2 प्रति 3 पत्तियाँ, सफेद मक्खी कि संख्या 1.0 से 1.2 प्रति 3 पत्तियाँ, फूलकीट 0.2 से 2.8 प्रति 3 पत्तियाँ, एफिड 0.5 से 2.4 प्रति 3 पत्तियाँ दर्ज किए गए। *राइजोक्टोनिया* जड़ गलन कि रोकथाम के लिए कॉपर-ऑक्सी-क्लोराइड @ 3.0ग्रा. प्रति लीटर पानी कि दर से इनका घोल प्रभावित पौधों की जड़ों में डालें। फफूंदजन्य पत्ती धब्बों की रोकथाम के लिए सिफारिश किए गए फफूंदनाशकों का छिड़काव करें। अधिक तापमान तथा अधिक आद्रता के कारण रस चूषक कीट तथा *स्पोडोप्टेरा* की संख्या देखी जा सकती है। सफेद मक्खी के आर्थिक हानि सीमा पार कर जाने पर नीम तेल 1.0% अथवा निंबोली अर्क 5.0% (10 की.ग्रा. नीमबीज पाउडर प्रति एकड़ की औसत से निकला अर्क) के छिड़काव की सिफारिश की जाती है। *स्पोडोप्टेरा* की रोकथाम के लिए इसकी मादा का अंड समूह और इल्लियों के समूह को हाथ से नष्ट कर दें। आवश्यक होने पर नोवाल्यूरान @ 1.0 मिली./ली. अथवा लूफेन्यूरान @ 1.25 मिली./ली. की दर से फसल पर छिड़काव करें।
वारंगल	0	0	0	0	0	0	
खम्मन	0	0	0	0	0	0	
कारिंगर	0	0	0	0	0	0	
नालगोंडा	0	0	0	0	0	0	
आंध्रप्रदेश							
गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	
प्रकासम	0	0	0	0	0	0	
कर्नाटक							अधिकांश कपास उत्पादन क्षेत्रों में अगेती फसल 50% से अधिक गूलर खुलने के साथ पहली चुनाई की अवस्था में है। प्रात:काल जल्दी कपास न चुनें क्योंकि यह ओस से गीली रहती है। भण्डारन से पहले कपास को एक दिन के लिए सुखा लें। पहली चुनाई की कपास अच्छी गुणता की होने से इनकी अधिक कीमत लेने के लिए इसे अलग से भण्डारित करके बेचें। सिंचाई की सुविधा होने पर प्रत्येक चुनाई के बाद फसल की हल्की सिंचाई करें। पिछेती फसल पर 19:19:19 पानी में घुलनशील उर्वरक का 1.0% (10ग्रा./ली. पानी) मेग्नीशियम सल्फेट 1.0% (10ग्रा./ली. पानी) तथा प्लानोफिक्स (0.25 मिली./ली. पानी) के साथ फसल पर छिड़काव करें। इससे लाल पती रोग तथा कली झड़न की रोकथाम होगी। कुछ जिलों में जीवाणु झुलसा का प्रकोप देखा जा रहा है। इसके प्रबंधन के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन @ 0.5 ग्रा./ली. के साथ ड्रम में ब्लाइटाक्स @3ग्रा./ली. की दर से फसल पर छिड़काव करें।
धारवाड़	3	0	0	0	0	0	
हवेरी	0	3	0	3	0	0	
मैसूर	9	6	6	7	6	7	
तमिलनाडू							
पेरंबलुर	0	0	0	0	0	0	फसल पुष्पन अवस्था में है। दूब घास, गाजर घास तथा *ट्रायँथेमा पोर्टुलेकस्ट्र* जैसे खरपतवारों की रोकथाम के लिए अंकुरण-पश्चात खरपतवारनाशक का अनुप्रयोग किया गया है। एफिड का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से कम देखा गया है। अन्य कीटों एवं रोगों का प्रकोप फसल पर नहीं है।
सलेम	0	7	9	5	0	0	
त्रिची	4	7	11	25	8	0	
विरडुनगर	16	8	11	25	8	0	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80